Q) जैन धर्म तथा बौद्ध धर्म का तुलनात्मक अध्ययन कीजिए।

Ans) ई० पू० छठी सदी में जैन और बौद्ध दोनों ही धर्म अस्तित्व में आए। लोग वर्षों से चले आ रहे परंपरागत ब्राह्मण धर्म से निराश होकर इन दोनों धर्मों का अनुसरण करने लगे। दोनों ही धर्मों ने भारतीय समाज एवं संस्कृति को दूर तक प्रभावित किया। इसके बावजूद भी दोनों धर्मों के स्वरूप तथा प्रभावों में कुछ समानताएँ तथा असमानताएँ थी जो निम्न है।-

समानताएँ-

i) दोनों ही धर्म अनिश्वरवादी है।
ii) दोनों वैदिक यज्ञ, कर्मकांड का विरोध करते थे।
iii) दोनों ही अपने उपदेश जनभाषा प्राकृत एवं पाली में देते थे।
iv) जातिप्रथा का दोनों धर्मों में कोई स्थान न था।
v) दोनों धर्मों के परवर्तक महावीर स्वामी और गौतम बुद्ध क्षत्रिय थे।
vi) दोनों धर्मों ने संसार को दुखमय कहा एवं कर्म के द्वारा ही आप मुक्ति का मार्ग पा सकते है।

Scanned with CamScanner

असमानताएँ -

i) अहिंसा
ii) निर्वाण (मुक्ती)
iii) आत्मा का स्वरूप
iv) त्यागपूर्ण जीवन
v) ब्राह्मणों से संबंध
vi) धर्म का प्रसार
vii) मूर्तिपूजा
viii) भाषा

Q) स्तूप क्या है? साँची स्तूप को बचाने के लिए और इसके संरक्षण में भोपाल के बेगमों ने क्या भूमिका निभाई?

Ans) स्तूप का संस्कृत अर्थ टीला अथवा ढेर होता है। महात्मा बुद्ध के परिनिर्वाण के बाद उनकी अस्थियों को आठ भागों में बाँटा गया तथा उन पर समाधियों का निर्माण किया गया, इन्हीं को स्तूप कहा जाता है। स्तूप का सबसे पहले उल्लेख ऋग्वेद में आता है। इसमें अग्नि की उठती हुई ज्वालाओं को स्तूप कहा गया है।

पहले मात्र भगवान बुद्ध के अवशेषों पर स्तूप बने। आगे चलकर उनके शिष्यों के अवशेषों पर भी स्तूप निर्मित किए गए।

स्तूप के चार प्रकार बताए गए हैं।

1) शारीरिक - इसमें बुद्ध या उनके शिष्यों के शरीर के विभिन्न अंग दांत, नाखुन या केश रखे जाते थे।

② पारिभौतिक - इसमें बुद्ध द्वारा उपयोग में लाई गई वस्तुओं पात्र, चरण पादुका, आसन आदि रखे जाते थे।

③ उद्देशिक - ये स्तूप भगवान बुद्ध से संबंधित स्थानों (जन्म, निर्वाण, यात्रा स्थल) उनकी स्मृति स्वरूप बनाया गया था।

④ संकल्पित - ये बौद्ध तीर्थ स्थलों पर श्रद्धालुओं द्वारा निर्मित किए गए। इनका आकार छोटा होता था।

साँची एवं भोपाल की बेगमें - 1818 ई० में सबसे पहले साँची के स्मारकों की खोज जनरल टेलर ने की। भोपाल की बेगम शाहजहाँ बेगम के शासन काल (1868-1901) में यहाँ 1881 ई० में मेजर H.H. Cole ने पहाड़ी के ऊपर का जंगल साफ कराया तथा स्तूप संख्या 1 को मरवाया। साथ ही उन्होंने दक्षिण-पश्चिमी तोरण द्वार तथा स्तूप के तीन गिरे हुए तोरणों को फिर से खड़ा करवाया। यहाँ से 1 बड़ा और 2 छोटा स्तूप मिला। भूरो-पियों ने साँची के स्तूप में अधिक रुचि ली। फ्रांसीसियों ने सबसे अच्छी हालत में बचे पूर्वी तोरण द्वार को फ्रांस के संग्रहालय में ले जाने के लिए अनुमति माँगी। अंग्रेजों ने भी ऐसा करने का प्रयास किया। इसी कारण तोरण को ले जाना संभव नहीं हो पाया और इसके बदले में तोरण की प्लास्टर की प्रतिकृतियाँ बनाई गई। इन्हें प्राप्त कर अंग्रेज और फ्रांसीसी संतुष्ट हो गए। इस प्रकार साँची का स्तूप मूलरूप से संरक्षित रहा।

Scanned with CamScanner

शाहजहाँ बेगम एवं उसके उत्तराधिकारी सुल्तान जहाँ बेगम ने साँची के धरोहर के रख-रखाव के लिए पैसे दिए। जॉन मार्शल ने साँची पर लिखे अपने ग्रंथ को सुल्तान जहाँ को समर्पित कर दिया। बेगम ने साँची में संग्रहालय और अतिथीशाला बनाने के लिए अनुदान दिया। इस प्रकार साँची स्तूप के संरक्षण में भोपाल के बेगमो ने अहम भूमिका निभाई।

1953 ई० प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली की नींव रखी और 1989 ई० मे साँची को एक विश्व-कलादय घोषित कर दिया गया।

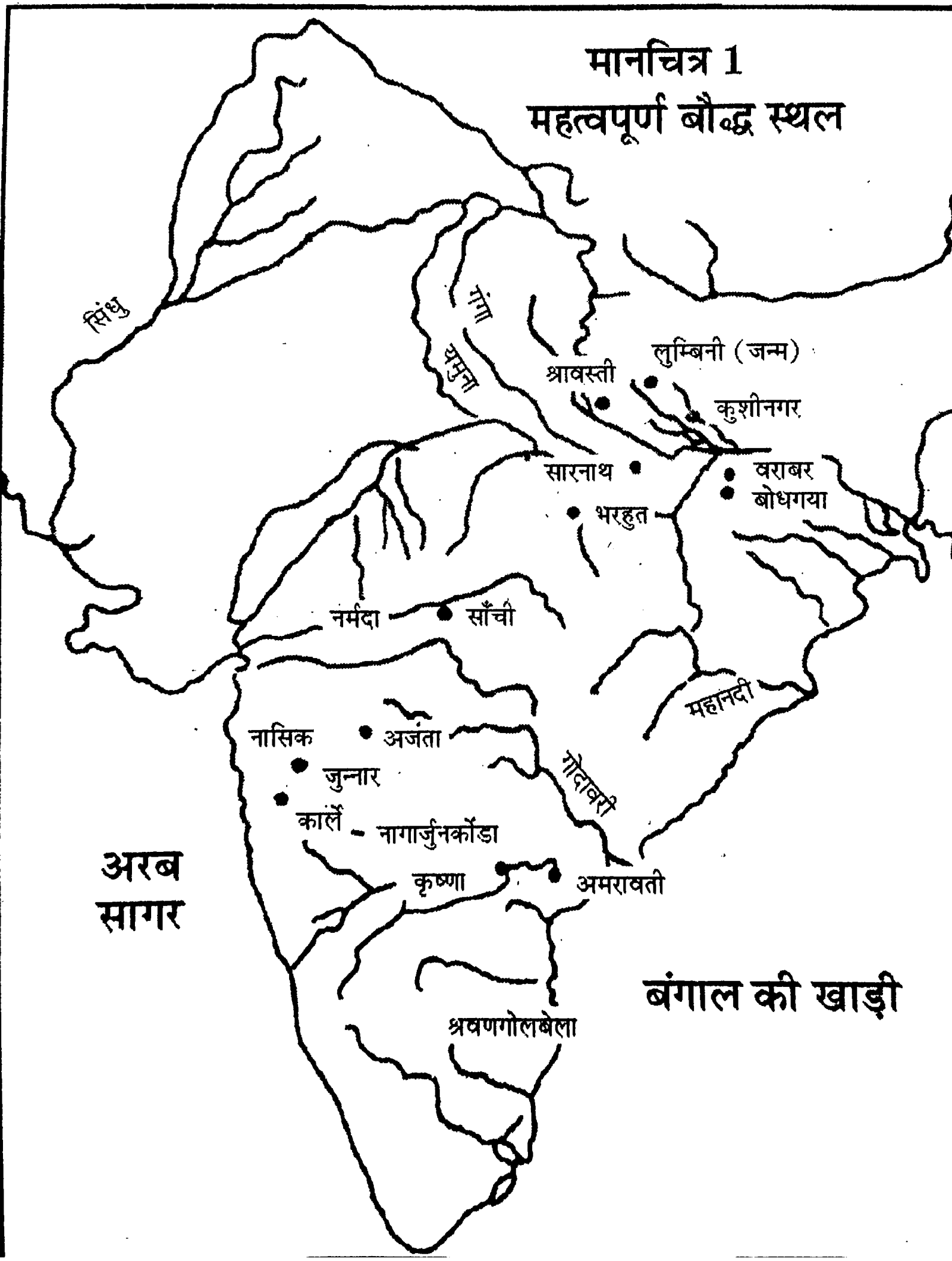

Scanned with CamScanner